निर्देशकीय

बाघैन कहानी के इस मंचन में लेखक से भिन्न कथ्य नहीं है। कथ्य का कोई भिन्न विन्यास भी नहीं है। कहानी पढ़ते-पढ़ते उसके कथ्य और प्रवाह में मेरी सम्वेदना स्वत ही समन्वित होती चली गयी। कहानीकार, कहानी का पात्र - आनन्द बल्लभ और इस मंचीय प्रस्तुति का अभिनेता-निर्देशक ये तीनों एक ही प्राकृतिक, सांस्कृतिक और सांस्कारिक पृष्ठभूमि का प्रतिनिधित्व करते हैं। मैं कहानीकार की चिन्ता, चिन्तन और सम्वेदना को जितना समझ पाया हूँ उसके आधार पर यह कह सकता हूँ कि कहानीकार ने ही अपनी कहानी के पात्र आनन्द बल्लभ का रूप धारण किया है। कहानी के मंचीय अवतार में अभिनेता और निर्देशक के लिए भी यही अभीष्ट है। अभिनेता और निर्देशक एक ही व्यक्ति होने से यह मनोवैज्ञानिक गूढ़ कार्य थोड़ा सरल तो हो ही गया।

कहानीकार, कहानी के पात्र, अभिनेता और निर्देशक की प्राकृतिक, सांस्कृतिक और सांस्कारिक पृष्ठभूमि एक होने के फलस्वरुप निर्देशक और अभिनेता के लिए कहानी का कोई दूसरा सन्दर्श (perspective) गढ़ने का कोई औचित्य नहीं है। कई बार कहानी या नाटक के मंचन को समसामयिक या समस्थानिक बनाने की आवश्यकता होती है। इसलिए निर्देशक पात्रों के चरित्र-चित्रण तथा दृश्यविधान में भिन्न सन्दर्श और भिन्न विन्यास देने का प्रयास करते हैं। इस कहानी में ऐसी कोई आवश्यकता नहीं। कई बार निर्देशक अपनी नवोन्मेषी वैचारिक दृष्टि और कल्पनाशीलता का परिचय देने के लिए संगति-असंगति-विसंगति पर ध्यान दिये बिना ही कथ्य, चरित्र और दृश्य निरूपण के भिन्न सन्दर्श और भिन्न आयाम गढ़ देते हैं। मैं ऐसे दुराग्रह का तो दुस्साहस कभी नहीं कर पाया।

मेरे उपरोक्त कथन का यह अभिप्राय भी नहीं है कि मैं स्वयं को दूध का धुला सिद्ध करने का प्रयास कर रहा हूँ। इस कहानी में मैंने लेखक की पूर्व अनुमति प्राप्त करने के पश्चात् कई जगहों पर कई वाक्य और लोकगीतों के कुछ बोल जोड़े हैं। लेकिन ये वाक्य और गीतों के अंश चिन्तन और कल्पनाशीलता के अभ्यास का परिणाम नहीं बल्कि अनुभूतिजन्य हैं। स्थान-स्थान पर कहानी के प्रकरणों की वेदना से मेरी सम्वेदना के तादात्म्य ने इन वाक्यों को जन्म दिया। उन्हीं से संगति बनाते हुए मेरे अन्तस् में कुछ प्राचीन लोकगीतों के अंश भी आ मिले।

हाँ ! कहानी का अन्त जहाँ पर हुआ है, मंचन में उसका अन्त उससे कुछ आगे किया गया है। कहानी पठन-पाठन वैयक्तिक होता है। पाठक ही कहानी को पढ़ता है और पाठक ही उसका अन्तश्रवण भी करता है। कर्ता और कर्म एक ही होता है। मंचीय प्रदर्शन में अभिनेता और दर्शक दोनों पृथक-पृथक होते हैं। इसलिए न्यूनाधिक कारणों से निर्देशक और अभिनेता को मूल कहानी में कथा के साथ संगति का संरक्षण करते हुए कुछ जोड़ने-घटाने की आवश्यकता पड़ सकती है। ऐसा मेरे साथ भी हुआ है। मैं लेखक से इस अप्रिय अपराध हेतु क्षमा याचना करता हूँ।

मंच पर

आनन्द बल्लभ - ललित सिंह पोखरिया
शेरू श्वान - अदृश्य उपस्थिति

पार्श्व मंच

मंचसज्जा क्रियान्वयन - अमन सिंह, आशीष द्विवेदी, अंकित राव, विशाल सिंह
वेशभूषा व मंच-सामग्री - निशु सिंह
सहायक - योगेन्द्र पाल, पीयूष राय
प्रकाश संचालन - मनीष सैनी
संगीत संचयन-संचालन - अंकुर सक्सेना
ग्राफ़िक डिज़ाइनिंग - चन्दन सिंह पोखरिया
वीडियो, फोटोग्राफी एवं बाह्य व्यवस्था - अनुराग शुक्ला 'शिवा

निर्देशन

ललित सिंह पोखरिया

निसर्ग
सर्वविदः सर्जन सर्गः
सृजननाद्यकुलम्

निसर्ग - आयोजन
Natural Integral Spiritual Arts Restoration Group

पीयूष पाण्डे स्मृति

एक थे पीयूष पाण्डे : संक्षिप्त श्रद्धाञ्जलि वक्तव्य

पुस्तक लोकार्पण : "कगारै आग" (कुमाऊँनी नाटक)

नाट्य प्रस्तुति : बाघैन (कहानी : नवीन जोशी)

अभिनय-निर्देशन : ललित सिंह पोखरिया

16 दिसंबर 2024 सायं 6:30 बजे

वाल्मीकि रंगशाला, उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, गोमती नगर-लखनऊ

-: प्रस्तोता :-
मंजुला पाण्डे

ललित पोखरिया नवीन जोशी

संपर्क सूत्रः 'निसर्ग' सी 136/14, शिवानी विहार, कल्याणपुर- लखनऊ । 226022 । मो. 9839020107

पीयूष चन्द्र पाण्डे (1951-2023)

यूँ तो पीताम्बर पाण्डे और विद्या देवी की सभी नौ सन्तानों के डीएनए में संगीत और अभिनय बराबर पुष्पित हुआ लेकिन पाँचवें नम्बर की सन्तान पीयूष चन्द्र पाण्डे सबसे अलग, जुनूनी, समर्पित और प्रतिभाशाली निकले। 'कुमाऊँ परिषद' की मुरलीनगर वाली प्रसिद्ध रामलीला में बचपन से ही उनका संगीत व अभिनय निपुण होना पारखियों की निगाह में आने लगा था। 1960 व 1970 के दशक में इस रामलीला में पीयूष सबके चहेते अभिनेता थे। राम का उनका जैसा किरदार कोई और नहीं निभा सका। 'पित्दा' के नाम से चर्चित उनके पिता पीताम्बर पाण्डे इस रामलीला के संगीत उस्ताद थे, जो नौकुचियाताल (नैनीताल) के सिलौटी गाँव से लखनऊ आ बसे थे। उन्होंने 1930 के दशक में मैरिस कॉलेज ऑफ़ म्यूज़िक (आज का भातखण्डे संगीत विश्वविद्यालय) से संगीत विशारद किया था। गायन-वादन में निपुण पीताम्बर पाण्डे लखनऊ में 1941 में हुए पहले अन्तर्राष्ट्रीय संगीत सम्मेलन की आयोजन समिति में भी शामिल थे।

17 मई 1951 को जन्मे पीयूष की प्रतिभा उन्हें किशोरावस्था से ही आकाशवाणी, दूरदर्शन और फिर शहर की नाट्य संस्थाओं की ओर ले गयी। 1975-76 में 'शिखर संगम' और 1978 से 1988 तक 'आँखर' संस्थाओं के कुमाऊँनी-गढ़वाली नाटकों में न केवल उन्होंने जानदार अभिनय किया, बल्कि 'मोटर रोड', 'चन्दन', 'ब्या है ग्यो', 'ह्यूना पौण' और 'कगारै आग' समेत कई नाटकों का निर्देशन भी किया। 'कगारै आग' उनकी सबसे सुन्दर प्रस्तुतियों में एक थी। 'आँखर' ने कानपुर, भोपाल, नैनीताल, अल्मोड़ा, मुरादाबाद में भी अपने कुमाऊँनी नाटक मंचित किए। यही वह दौर था जब पीयूष प्रसिद्ध नाट्य निर्देशक देवेन्द्र राज 'अंकुर', उर्मिल कुमार थपलियाल और शशांक बहुगुणा जैसे प्रयोगशील निर्देशकों की नज़रों में चढ़े। पीयूष के सम्पर्कों के कारण ही 'अंकुर' जी ने 'आँखर' के लिए शेखर जोशी की चार कहानियों (दाज्यू, बोझ, व्यतीत एवं कोसी का घटवार) का कहानियों के रूप में ही मंचन किया। यह 'आँखर' का उत्कर्ष काल था तो अभिनेता एवं निर्देशक के रूप में पीयूष के मँजने और परिपक्व होने का समय भी। पीयूष के कारण ही हेमेन्द्र भाटिया, पीर गुलाम, पी. डी. वर्मा जैसे रंगमंच के सुपरिचित नाम 'आँखर' के नाट्य प्रदर्शनों के साथ जुड़े रहे थे।

शशांक बहुगुणा ने जब 'लक्रीस' नाट्य संस्था का गठन किया तो पीयूष उसके सक्रिय सदस्य व अभिनेता ही नहीं, प्रमुख कर्ता-धर्ता भी बने थे। 'लक्रीस' ने 'मनोशारीरिक रंगमंच' के सर्वथा नये प्रयोग करते हुए' 'खड़िया का घेरा' और 'तुग़लक़' जैसे नाटकों का मंचन किया जिनमें पीयूष ने देह से अभिव्यक्ति की नई रंग-भाषा सीखी। फिर लगभग उसी शैली में 'दर्पण' के लिए 'सृष्टि' नाटक का निर्देशन किया। संगीत की दक्षता और नैसर्गिक अभिनय क्षमता ने पीयूष को उर्मिल थपलियाल का एक प्रिय अभिनेता बनाया जो लोक संगीत को अपने नाटकों का मुख्य आधार बना रहे थे। 'हरिश्चन्नर की लड़ाई', 'चूँ-चूँ का मुरब्बा' और 'हम फ़िदाए लखनऊ' जैसे प्रदर्शनों में उन्होंने पीयूष की प्रतिभा का शानदार उपयोग किया। 'हरिश्चन्नर की लड़ाई' को पीयूष अपना प्रिय नाटक मानते थे। उर्मिल थपलियाल ने अपने दादा भवानीदत्त थपलियाल जी के 1911 में लिखे गये गढ़वाली नाटक 'प्रह्लाद' के लोक-संगीत-प्रधान मंचन में भी पीयूष को प्रमुख भूमिका दी थी। इन प्रदर्शनों ने पीयूष को स्वाभाविक एवं जीवन्त अभिनेता साबित किया। 'दर्पण' के लिए उन्होंने शंकर शेष के नाटक 'कोमल गांधार' का भी निर्देशन किया था। उन्होंने झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले बच्चों के लिए कई बार नाट्य-कार्यशालाएँ एवं नाट्य प्रदर्शन भी आयोजित किये थे। स्पार्क इण्डिया व ज्योति किरण स्कूल की ओर से मस्तिष्क प्रक्षाघात पीड़ित बच्चों के लिए नाट्य कार्यशाला और प्रस्तुतियों में वे प्राणपण से लगे रहते थे। अभावग्रस्त एवं समस्याग्रस्त बच्चों के लिए उनमें स्वाभाविक स्नेह था और वे उनकी प्रतिभा उजागर करने का अवसर नहीं चूकते थे। एक दौर में पीयूष उत्तर प्रदेश के गाँवों में घूमने वाली कठपुतली टोलियों में भी शामिल रहे थे।

पिछले कोई डेढ़ दशक से सेठ एम. आर. जयपुरिया स्कूल, गोमतीनगर-लखनऊ 'ड्रामा डायरेक्टर' के रूप में अनुबन्धित करके उनकी प्रतिभा का सदुपयोग कर रहा था। बच्चों ने उनके निर्देशन में कई अच्छी प्रस्तुतियाँ दीं और प्रतियोगिताओं में पुरस्कार पाये। जयपुरिया स्कूल के साथ उनका अनुबन्ध अन्तिम समय तक जारी रहा। महानगर रामलीला समति की वार्षिक रामलीला में भी पिछले कई वर्षों से वे निर्देशक के रूप में कलाकारों को माँजने-सँवारने का काम कर रहे थे। कई नये कलाकारों को उन्होंने तैयार किया। कैंसरग्रस्त होने के बावजूद 2023 की नवरात्रि में उन्होंने इस रामलीला की तालीम का संचालन किया था।

प्रतिभा और क्षमता के अनुपात में पीयूष पाण्डे कतई महत्वाकांक्षी नहीं थे। उनका अतिशय विनयशील, अत्यन्त संकोची और अतिरिक्त स्वाभिमानी होना उन्हें उस मुकाम तक नहीं ले जाया पाया जहाँ उन्हें पहुँचना चाहिए था। संकोच का एक बड़ा कारण उनकी सीमित स्कूली शिक्षा थी तो स्वाभिमान की अतिरिक्त सतर्कता ने उन्हें अग्रिम पंक्ति में आने से रोके रखा। तो भी पीयूष पाण्डे का नाम लखनऊ और उत्तर प्रदेश के प्रमुख रंगकर्मियों में ससम्मान लिया जाता है। पिछले चार दशकों से हिंदी रंगमंच पर अभिनेता, गायक, निर्देशक और संगीतकार के रूप में सक्रिय रहे पीयूष पाण्डे की उपलब्धियों की संक्षिप्त सूची इस प्रकार बनती है-

प्रमुख निर्देशक, जिनके साथ काम किया-

बादल सरकार, प्रवीर गुहा, देवेन्द्र राज 'अंकुर', रतन थियम, विजय सोनी, उर्मिल कुमार थपलियाल और शशांक बहुगुणा।

प्रमुख नाटक-

तुग़लक़, खड़िया का घेरा, डॉक्टर फ़ास्टस, बाक़ी इतिहास, जॉन बुल, हरिश्चन्नर की लड़ाई, तुम सम पुरुष न मो सम नारी, हुइयै वही जो राम रचि राखा, अन्धा युग, बलराम की तीर्थयात्रा, कटघरे का आदमी, सरफ़रोशी की तमन्ना, इन्द्र धनुष, एक हती मनु, भौरी कथा, गाथा काम कुण्डला की, सूरज कहाँ से उगता है, शहीदों ने लौ जगाई जो, भारमलि, रंग दे बसन्ती चोला, माधवी, अबू हसन, कफ़न, सवा सेर गेहूँ, पूस की रात, कोरस, सृष्टि, अभिनव, राजकुमार और पोलू, वापसी। (अभिनय और निर्देशन समेत करीब एक सौ नाटकों/नुक्कड़ नाटकों में भागीदारी, अनुमानत: 300 प्रदर्शन।)

कुमाऊँनी/गढ़वाली नाटक-

मोटर रोड, ह्यूंना पौण, पुंतुरि, दाज्यू, व्यतीत, बोझ, कोसी का घटवार, प्रह्लाद, जय-विजय, कगारै आग, मालूशाही, भस्मासुर।

विशेष-

नौटंकी, स्वांग, छाऊ नृत्य, कठपुलती प्रदर्शन, छाया चित्र प्रदर्शन में प्रशिक्षित।

सक्रिय सम्बद्धता-

लक्रीस, शिखर संगम, दर्पण, आँखर, कुमाऊँ परिषद, महानगर रामलीला समिति, लखनऊ एवं सेठ एम. आर. जयपुरिया स्कूल, लखनऊ।

सम्मान-

नेशनल थियेटर फ़ेस्टिवल ऑफ़ चिल्ड्रन (नयी दिल्ली), मंचकृति, इफ़को, अ. भा. उत्तराखण्ड युवा संगठन, सल्ट सूर्य, पर्वतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक कला केन्द्र, ज्योति किरन स्कूल, पर्वतीय परिषद (पीलीभीत एवं मुरादाबाद), रोटरी क्लब, कला संगम, नव क्रान्ति कला केन्द्र, गोपाल उपाध्याय स्मृति सम्मान, पर्वतीय महापरिषद, उत्तराखण्ड महापरिषद, महानगर रामलीला समिति, आदि से सम्मानित।

16 दिसम्बर 2023 को इस प्रतिभाशाली रंगकर्मी का निधन हो गया। उनके मित्र और परिवारीजन आज पहली पुण्यतिथि पर उन्हें बड़ी श्रद्धा और सम्मान से याद करते हैं।

-नवीन जोशी

"बाघैन" कहानी का मंचन और सार-तत्व

'बाघैन' आधुनिक विकास की विसंगतियों और अतियों की त्रासद कहानी है। इस त्रासदी को आज के उत्तराखण्ड के गाँव-गाँव में घटित होते देखा जा सकता है। लेकिन यह केवल उत्तराखण्ड की कहानी नहीं है। असंगत, अवैज्ञानिक और प्रकृति-विरुद्ध विकास का बाघ आज देश के किसी भी ग्रामीण क्षेत्र में स्पष्ट देखा जा सकता है। शहरों को भी वह खा ही रहा है।

- नवीन जोशी